रजनी सेखरी सिबल

गप्पू और लंगूर

चित्रण - सत्यराज अय्यर

आलोक प्रकाशन

गप्पू और गुच्ची भाई बहन थे। वे चित्रकूट नगर के जंगल के पास अपने पिताजी के साथ रहते थे। माँ तो बचपन में ही चल बसी। पिताजी, जो फारेस्ट ऑफिसर थे, उन्होने ही दोनों बच्चों को पाला पोसा था और पढ़ाने की कोशिश भी कर रहे थे। वे कोशिश करते थे पर, गप्पू इतना शैतान था कि हाथ ही नहीं आता था। वे कोशिश करते थे कि उसको किसी न किसी तरह समझा कर उसका ध्यान पढ़ाई की ओर करें।

गप्पू की एक विशेष आदत थी। उसको पेड़ पर चढ़ना बहुत ही अच्छा लगता था। लेकिन था तो सिर्फ 6 साल का। अब 6 साल के गप्पू के पाँव तो ज़मीन तक पहुँच ही नहीं पाते थे। हाथ ऊपर करके, किसी न किसी तरह, छलांग मारके टहनी पकड़ कर पेड़ पर चढ़ने लगता था। तब गुच्ची जोर से चिल्लाकर अपने बाबा को बुलाती थी – "बाबा देखो गप्पू फिर पेड़ पर चढ़ गया."

बाबा तुरंत आते, डराने के लिये हाथ में छड़ी लेकर कहते – "एक दिन लंगूर के साथ मैं तुमको बांध दूँगा। जाने कैसे तुम मेरे घर में आ गए हो। तुम्हारी सभी हरकतें लंगूरों की ही है।"

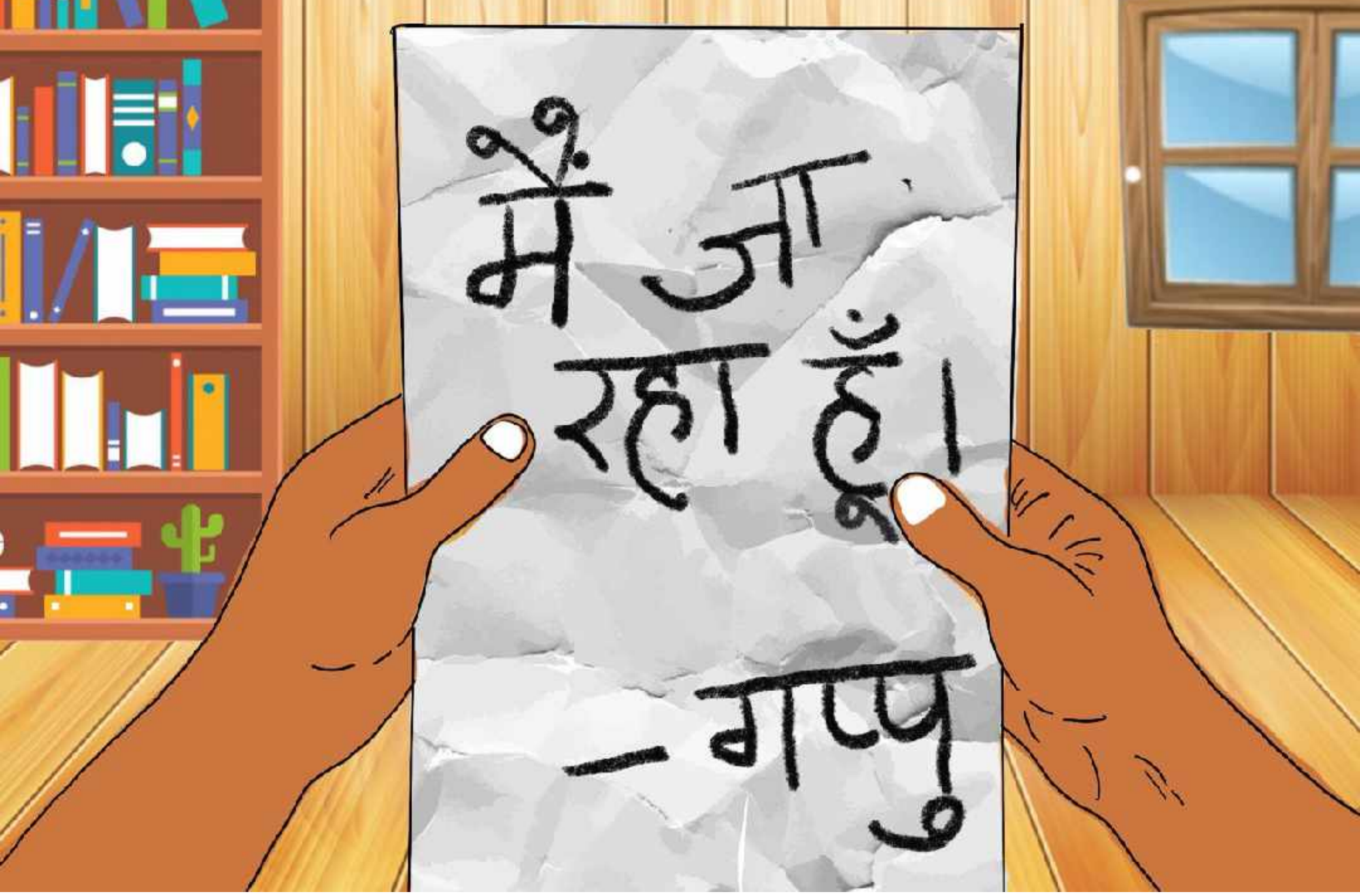

एक दिन नाराज गप्पू लड़-झगड़ कर अपनी पोटली में एक सेब, एक केला और खाने के लिए थोड़े से चॉकलेट्स डालकर निकल पड़ा। उसने सोचा कि मैं लंगूर हूँ तो ठीक है लंगूरों के साथ ही जंगल जाता हूँ। वहीं रहूँगा। नहीं रहना है मुझे आपके घर. एक छोटा सा खत लिख "मैं जा रहा हूँ," गप्पू निकल गया।

चलते-चलते जंगल में पहुँचा। पहुँचते ही देखा कि शाम होने लगी है। उसने सोचा, "लंगूरों को ढूंढा कैसे जाये."

सोच ही रहा था गप्पु कि रास्ते में उसे एक छोटी सी बिल्ली मिली। बिल्ली भी अपना रास्ता भूलकर जंगल की तरफ जा रही थी। गप्पू को देखकर वह बहुत खुश हुई. शुक्र है कहीं कोई तेंदुआ नहीं दिखा, नहीं तो पकड़ लेता, इसलिए गप्पू के साथ चल दी. ''कहाँ जा रहे हो गप्पू ?"

"क्या बताऊँ बिल्ली, सुबह से बाबा डाँटते जा रहे थे। ऊपर से गुच्ची ने मेरी सारी चीजों को फाड़ दिया, तो मैं तो घर छोड़ आया हूँ। जब मैं पेड़ों पर चढता हूं तो सब मुझे लंगूर-लंगूर कह कर पुकारते हैं। मैं तो लंगूरों के पास जा रहा हूँ भई।"

"अच्छा तो लंगूरों के पास कैसे जाओगे? तुम तो लंगूरों को जानते नहीं हो।" ''ढूंढ लूंगा, अपने जैसा कोई छोटा, मजेदार लंगूर।"

“अरे गप्पू, तुमको तो पता ही नहीं। लंगूर अकेले थोड़ी मिलते हैं। लंगूर एक साथ रहते हैं, एक बड़े परिवार की तरह। जैसे तुम, तुम्हारे बाबा, तुम्हारी बहन एक घर में रहते हैं ना, उसी तरह एक ऐल्फा लंगूर होता है, सबसे बड़ा जो नर होता है, वह अपना अलग से एक दल बनाता है। उस नर के साथ सारी मादाएँ होतीं हैं। उनके छोटे बच्चे भी उस दल में, एक साथ रहते हैं।

जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, नर बच्चों को बाहर निकाल देता है, यह कह कर कि आप अपना दल अलग बनाइये। वे छोड़ देते है अपने बचपन का दल और एक अलग दल बना लेते हैं.”

‘’अच्छा, ऐसा है!” गप्पू बोला

‘’हां’’ बिल्ली बोली

गप्पू ने पूछा ‘’तब मिलेंगे कहाँ ?”

“चलो ढूंढते हैं, आवाज लगाओ।” बिल्ली मौसी ने कहा
गप्पू सोच में पड़ गया और बोला “कैसे आवाज लगाऊँ?
मैं तो किसी को भी नहीं जानता।”
“अरे मैं जानती हूँ” बिल्ली ने कहा।
“एक लंगूर से, बहुत अरसे पहले दोस्ती की थी। उसका
नाम है चिंकी।”
“चिंकी, यह कैसा नाम है!” गप्पू ने हैरानी से पूछा।
“अरे, उसकी एक आँख छोटी है ना। तो वो जब शहर जाती
है तो सभी लोग उसे चिंकी कहते हैं।” बिल्ली ने कहा।

“शहर भी जाते है लंगूर?” गप्पू ने हैरानी से पूछा

“हां, जब उनको जंगल में अच्छे जंगली फल नहीं मिलते, अच्छे पौधे खाने को नहीं मिलते तब शहर चले जाते हैं. वहाँ से कुछ-कुछ उठा कर, खा-पीकर वापस जंगल में आ जाते हैं, रात को सोने।”

बिल्ली ने कहा।

“अच्छा-अच्छा तो बुलाओ उस चिंकी को.”अब बिल्ली जोर से चिल्लाई – “चिंकी म्याऊँ, चिंकी म्याऊँ।”

तो क्या हुआ, जोर से ऊपर से आवाज आई. एक पेड़ की ऊपरी डाली से चिंकी, एक छोटी सी लंगुर की बच्ची, उतरी और नीचे जम्प कर बिल्ली से मिलने आ गयी।

चिंकी ने गप्पू से पूछा “अरे तुम पेड़ पर चढ़ते हो?”

तो गप्पू बोला – “हां, मैं गप्पू हूँ और मुझे भी पेड़ों पर चढ़ने में बहुत मजा आता है. मैं भी तुम्हारे साथ चढ़ना चाहता हूँ।” “हूं, चिंकी बोली – “तुम तो शैतानी में चढ़ते हो भैया। हम वहाँ रहते हैं, और चढ़ते है पेड़ों पर खाना ढूंढ़ने, ताकि अपना पेट भर सके। जब हमें जंगल में खाना नहीं मिलता तो पास के शहर में चले जाते हैं। चित्रकूट चले जाते हैं. कहीं और जाते हैं. ढूंढ-ढ़ांड कर, खा-पीकर घर आते हैं, अपने जंगल में।

वहाँ हम ऊँचे से ऊँचे पेड़ पर, अपने दल के लीडर के साथ जाकर सो जाते हैं और लीडर, जिसे ऐल्फा नर कहते हैं, वो रात भर जागता है, यह देखने के लिये कि कहीं कोई तेंदुआ तो नहीं आ रहा। इस तरह वह हम सबकी सुरक्षा करता है। जब भी कोई तकलीफ हो तो हमारे दल का लीडर ही हम सबकी देखभाल करता है।”

ऐसा सुन कर गप्पू बोला – “अरे आपका नर तो हमारे पिता की तरह है। अगर पिताजी घर पर हों, तब हम लोग किसी से भी बिल्कुल नहीं डरते।

चिंकी ने कहा – “सूर्योदय और सूर्यास्त के बीच, मैं कहीं भी घूम लेती हूँ. मैं और मेरे भाई-बहन, सब इधर-उधर बहुत उधम मचाते हैं. लेकिन जैसे ही रात होती है, हम घर पहुँच जातें हैं, और घर पहुँच कर खा-पीकर आराम करते हैं.

बड़ी चट्टानों पर, वृक्षों पर, बेफिक्र होकर सो जाते हैं। हम रात भर आराम करते हैं, क्योंकि हमारे ऐल्फा नर या भूकी नर, जो हमारे बाबा के समान हैं, हमारी देखभाल अच्छे से करते हैं। हम सारी रात बेपरवाह सोते रहते हैं, क्योंकि बाबा जागते हैं, जिससे हमें कोई नुकसान ना पहुँचे। हम हर तरह से सुरक्षित हों।"

यह सुनकर गप्पू को थोड़ा सा रोना आने लगा। बाबा की याद आई। “बाबा जब डाँटते हैं, तब कुछ तो मेरी भी गलती होती है,” - गप्पू ने सोचा। उसने बिल्ली से कहा – “मुझे तो घर छोड़ दो प्लीज। मुझे घर ले चलो। रात होने वाली है. मुझे तो अपने बाबा को सॉरी कहकर घर पर ही रहना है। मैं लंगूर नहीं बनूँगा। मुझे लंगूर नहीं बनना. मुझे तो स्कूल जाना है। मैं पढ़ूंगा, लिखूंगा। मुझे लंगूर बनकर सारी उम्र पेड़ों पर नहीं काटना है। बस एक आध बार पेड़ पर चढ़ने का मन करता है। सारी उम्र थोड़ी पेड़ों पर बितानी है।” ऐसा कहकर गप्पू ने बिल्ली को मनाया और बिल्ली ने धीरे-धीरे गप्पू के साथ चलकर उसका घर ढूंढा।

गप्पू को घर पहूँचा कर छोड़ा, फिर बाय-बाय कहकर निकल गयी।

चिंकी अपने घर में आराम से फल खाकर रात को तेन्दुए से बचने के लिए ऊँचे पेड़ पर चढ़कर सो गई।

गप्पू अपने घर पहूँच गया। दोनों हाथों से अपने कानों को पकड़ कर बाबा के सामने माफ़ी माँगी और हाथ जोड़कर कहा – ‘’बाबा, प्लीज़ मुझे माफ़ कर दीजिए। मैने बहुत बड़ी गलती करी है, जो मैं घर छोड़ कर गया। अब कभी भी ऐसी गलती नहीं करूँगा, क्योंकि मैं तो बस आप ही तरह बनना चाहता हूँ। स्कूल जाऊंगा। पढूंगा और बड़ा होकर एक अच्छा इंसान बनूँगा। मुझे लंगूर नहीं बनना। लंगूर दिन भर, साल भर, सालों-साल जितनी बार भी पेड़ चढ़ते रहें, मैं तो केवल कभी-कभी पेड़ चढूँगा। संडे को एक बार कभी-कभी, बस।’’

बाबा खूब जोर से हँसें और गप्पू को गले से लगाकर बोले – “तुम तो मेरे बहुत अच्छे बेटे हो।”

“हाँ बाबा, एक बात तो सही है। गप्पू, गप्पू है और लंगूर, लंगूर है। मैं लंगूर थोड़ी न हूँ ! ”

रजनी सेखरी सिब्बल भारतीय प्रशासनिक सेवा की 1986 बैच की टापर हैं और कुछ समय पहले भारत सरकार में सचिव के पद से सेवानिवृत्त हुई हैं। उन्हें उनकी प्रतिबध्दता और साहस के लिये वर्ष 2013 में 'अनसंग हीरो' कैटेगरी में इंडियान ऑफ द इयर का पुरस्कार मिला है।

रजनी ने भारत सरकार में मत्सय पालन विभाग की सचिव एवं उसके पूर्व गृह मंत्रालय तथा कौयाल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय में अपर सचिव के रूप में काम किया है। वे कृषि मंत्रालय में संयुक्त सचिव थीं तथा मैक्स इंडिया हैल्थ इंश्योरंस में संचालक थीं। उन्होने हरियाणा सरकार में भी विभिन्न पदों पर सेवा दी है।

रजनी मनोविज्ञान तथा अर्थशास्त्र में स्नाकोत्तर उपाधि प्राप्त हैं। उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखी हैं जिनमें प्रमुख हैं: *'Tools for Monitoring'; 'Clouds End and Beyond'*; *'Kamadhenu'*; *'Fragrant Words'*; *'Are You Prepared for a Disaster?'*; *'The Haunting Himalayas'*.

Email: rajnisekhrisibal@gmail.com